इन्टरव्यू २५
भेंटवार्ता देने वाले का नाम, उम्र नहीं हैं।

ज: दो चार साल से बहुत खराब है, पहले तो बहुत अच्छी थी, आदमी दाल रोटी शान्ति से कर लेता था।

प्र: क्यों खराब हुई है कुछ बता सकते हैं ?
ज: माला नहीं निकल रहा है बहुत ज्यादा दाम हो गया है, इसलिए, जहां माल जाता रहा है जहां इसकी खपत है वो कम हो गई है धन आगे का तो मालुम नहीं है, वही दम नहीं हैं उसमें, समझ लिजिए के सब दाम हम लोग या, ये सब मजदूरी पर लाकर बिन रहे हैं, तब भी हम लोग हो न कायदे से मजदूरी मिल रही है।

प्र: आप अपने करघे पर तानी मजदूरी घर लाये हैं ?
ज: जैसे करघा अपना है, तानी दूसरी जगह से मजदूरी पर लाये हैं, तानी बाना सब चीज हम साड़ी ले जायेंगे हम को मजदूरी मिलेगी।

प्र: पहले क्या आप का अपना ही तानी बाना होता था ?
ज: हां पहले तो इतना कि अपना बना लेते रहे, दो-चार हजार मिल जाता रहा।

प्र: कितने साल पहले तक ?
ज: अरे करीब-करीब तीन चार साल पहले, तीन चार पहले सब गड़बड़ा गया, एकदम बेकार हो गया।

प्र: तो आप अब अपनी तानी कभी नहीं लगाते या कभी अपनी तानी रही हैं ?
ज: ये स्थिति में तो कदियों अपनी तानी नहीं लगेगी, दूनों तरफ से वही बात है, अपनी तानी है, उम्मे थोड़ा नुकसान हो गया तो, मजदूरी कर रहे हैं, 50 प्रतिशत दूसरे का गया उसमें तो पूरा हमारा जायेगा।

प्र: आप जबसे काम शुरू कियें हैं, 18 साल से शुरू किये होंगे और पहले से ?
ज: 14-15 साल से।

प्र: तो जबसे आप शुरू किये हैं, तबसे आपके यहां से करघे घटे हैं या बढ़े हैं ?
ज: जैसे था वैसे ही है, बल्कि पहले तानी अपना था, अब तो मजदूरिये पर बिन रहे हैं।

अवरोध - (कैसेट का) कैसेट संख्या 3 का साईड ए खत्म
हफ्ता में 300-200 का काम हुआ 150 रुपया हमें 25 रुपये उन्हें मिल गया, 50 रुपया बहुत है आज, हफ्ता भर में 10 दिन में अगर साड़ी बनी, बहुत छोटा अगर लोकल आइटम है पहले तो कतान प्योर होते रहा, अब तो बम्बे से बुना रहा है।

प्र: यहां पर कोई बुनकर समिति नहीं हैं ?
ज: ये सब हम नहीं बता सकते हैं।

प्र: आपकी जानकारी में नहीं हैं ?
ज: हम तो अपने घर में इतना काम रहता है इ सब पता लगाने लगे तो काम क्या होगा टाईम नहीं है हम लोगों के पास।
खेड़ी तलाव का इन्टरव्यू खत्म